

आपातकाल

में
शृजत फुलवारी



राधा गोयल



आपातकाल में सृजन फुलवारी

राधा गोयल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश



978-93-5372-150-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 राधा गोयल
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RADHA GOYAL

वैधानिक चेतावनी:- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रूप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरूप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मैंने संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकी संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1. राष्ट्रव्यापी पूर्ण बंद (लॉकडाउन) के दौरान 6-9
समय का सदुपयोग (भाग-1)
2. राष्ट्रव्यापी पूर्ण बंद (लॉकडाउन) के दौरान 10-12
समय का सदुपयोग (भाग-2)
3. अश्वथामा 13-14
4. शंखनाद 15-17
5. जब कोरोना लौटेगा 18
6. कितनी उच्च संस्कृति हमारी 19
7. वो सुबह कभी तो आएगी 20
8. क्या यही धर्म है? 21

राष्ट्रव्यापी पूर्ण बंद (लॉकडाउन) के दौरान समय का सदुपयोग (भाग-1)

विश्व भर में कोरोना वायरस का प्रकोप जारी है जिसकी वजह से भारत समेत कई देशों की सीमाएँ सील कर दी गई हैं। सबको अपने घर में रहने के निर्देश दिए गए हैं। कुछ लोग इससे परेशान हैं। पहले से ही कई दिन से घर में हैं इसलिए ऊब गए हैं। ये नहीं सोचते कि यह ऐसा समय है कि उनके घर में रहने से न केवल बीमारी पर काबू पाया जा सकेगा...कई ऐसे काम हैं जिनके लिए हमेशा शिकायत रहती है कि समय ही नहीं है। अब तो समय ही समय है। अपने परिवार के साथ वक्त बताओ। पत्नी के साथ काम में सहयोग करो। बच्चों का भी फर्ज है कि घर के कामों में सहयोग करें।

एक अकेली औरत घर के काम करती है। आजकल मेड का आना भी वर्जित है। मौसम में बदलाव हो रहा है। सर्दी वाले कपड़े रखने होते हैं तो गर्मियों वाले कपड़े निकालने होते हैं... जो अपने आपमें एक बात बड़ा काम है। घर में और भी अनेकों ऐसे काम हैं, जिन्हें करने के लिए समय चाहिए और किसी की मदद भी चाहिए। जैसे:- सर्दियों के बिस्तर रखना और गर्मियों के कपड़े निकालना। यह भी अपने आपमें एक बहुत बड़ा काम है। बड़े बच्चे और पुरुष इस काम में महिलाओं की सहायता कर सकते हैं। घर में लगे जालों को झाड़ सकते हैं। बहुत जरूरी है कि रोजाना सुबह शाम घर में ही रहकर योग और प्राणायाम किया जाए... जो रोजाना की आपा-धापी में नहीं हो पाता। छोटे बच्चे बड़े बूढ़ों के पास बैठ कर दादी नानी की कहानियाँ सुनें, जिससे कि उनका भी अकेलापन दूर हो सके।

कुछ नया सीखा जाए। किसी-किसी को पढ़ने का बहुत शौक होता है किंतु समय नहीं मिल पाता। अब तो समय ही समय है। अपने पढ़ने के शौक को पूरा कर सकते हो। जो बिल्कुल अकेले रहते हैं, वे तो यह काम बड़े आराम से कर सकते हैं। जो बहुत समय से सोच रहे हैं कि कोई उपन्यास लिखा जाए, उनके लिए यह बड़ा अच्छा मौका है क्योंकि किसी का आना- जाना वर्जित है, तो समय ही समय है।

पहले के लोग अपने आत्मिक बल को बढ़ाने के लिए एकांतवास करते थे। उन्हें तो कभी एकान्तवास ने नहीं सताया। बड़े-बड़े आविष्कार एकांत में रहकर ही हुए हैं। सबसे बड़ी बात... हमारा नव संवत्सर शुरू हुआ है। हम सभी माता की पूजा करते हैं। कोई रामायण का पाठ करता है तो कोई दुर्गा सप्तशती का। इन नवरात्रों में मौका है कि सारे बच्चों को बैठकर बारी-बारी रामायण का पठन-पाठन किया जाए। मात्र 6 दिन में ही रामायण पूरी हो जाएगी। भारत में रामायण लगभग हर घर में होती है.. चाहे वह रामचरितमानस हो या बाल्मीकि रामायण या राधेश्याम की रामायण या अन्य किसी की। यह मौका है समय का सदुपयोग करने का और बच्चों में संस्कार भरने का... क्योंकि वैसे तो आजकल के बच्चे रामायण और गीता पढ़ते ही नहीं हैं, किंतु नवरात्रों के बहाने और लॉकडाउन के कारण कहीं जा नहीं पा रहे। मॉल, होटल, छविगृह, धार्मिक व ऐतिहासिक स्थल बंद हैं।

यातायात के साधनों पर प्रतिबंध है। लोकल बाजार में भी पाँच से अधिक लोग कहीं जरूरत का सामान लाने के लिये ही निकल सकते हैं और वह भी पैदल। बाईक पर भी प्रतिबंध है। मटरगश्ती करने वाले तो बेहद बोर हो रहे होंगे। कम से कम इसी बहाने पढ़ेंगे। पढ़ते समय बच्चों के वीडियो बनाओगे तो उन्हें और भी अच्छा लगेगा और वे इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे।

तुलसीकृत रामायण अवधी भाषा में लिखी हुई है जिसे पढ़ने में बच्चों को बोरियत महसूस हो सकती है। किंतु नीचे हिंदी में भी उसके अर्थ बताए गए हैं। जरूरी नहीं है कि दोहे और चौपाई भी पढ़ी जाएँ। हिन्दी या मातृभाषा में लिखा हुआ पढ़ें। गीता और रामायण का कई भाषाओं में अनुवाद है। रामायण जैसा ग्रन्थ पढ़कर बच्चों को पता लगेगा कि बड़ों से और छोटों से कैसे बोलना होता है।

*रोजाना 5 मिनट सभी मिलकर महामृत्युंजय का जाप करें।

*पाँच मिनट पंचाक्षर जाप करें।

*पाँच मिनट गायत्री मंत्र बोलें। उससे घर में एक सकारात्मक ऊर्जा पैदा होगी।

माताओं के पास कम समय होता है क्योंकि उनकी सारी जिंदगी घर के कामों में ही बीत जाती है। आजकल छुट्टियाँ होने के कारण बच्चों की माँँग भी बहुत बढ़ गई है। खाली हैं तो सारा दिन भूख सताती रहती है। बेवक्त सोते हैं, बेवक्त जागते हैं, बेवक्त नहाते हैं और बेवक्त खाते हैं। सभी के हिस्से में

दिन में उम्र के हिसाब से कुछ- कुछ काम लगाए जाएँ तो सबको औरतों के काम की अहमियत का पता लगेगा। दो-तीन दिन पुरुष घर की स्त्रियों को घर के कामों से पूरी छुट्टी दे दें ताकि वे भी अपने शौक के काम कर सकें। घर के सारे काम... खाना बनाने से लेकर कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, कपड़े सुखाना, बारिश होने पर कपड़े भीग न जायें, इसका ध्यान रखना, सूख जाने पर कपड़ों को उतारना व तह लगाना... उन्हें सही स्थान पर रखना जैसे सभी काम घर के बड़े बच्चे और पुरुष करें।

औरत को भी जिंदगी में थोड़ा आराम मिलना चाहिए क्योंकि उसे तो केवल अर्थी पर ही आराम मिलता है। कम से कम इस खाली समय में बोर होने के बजाय माँ, पत्नी को घर के काम से रिहाई दें। बड़े बच्चे... चाहे लड़की हो या लड़का... कॉलेज से छुट्टियाँ हो गई हैं, सारा समय सोने में न बिता कर घर के कामों में सहायता करें। छोटे बहन-भाइयों को पढ़ाएँ।

अपने बचपन को याद करें और उन्हें लिखें। आम के आम और गुठलियों के दाम। अपने लिखे को देखकर आपको खुद एक सुखद अनुभूति होगी। गपशप भी खूब करें और चुपचाप उसकी रिकॉर्डिंग करें। बाद में सुनें तो बड़ा मजा आएगा। समय हँसते-हँसते कब बीत गया, पता भी नहीं चलेगा।

बस जरूरी यही है कि अपनी दिनचर्या व्यवस्थित करें। समय को सोने में न गँवाकर कुछ रचनात्मक काम करें। माँ रसोई में काम करते- समय बच्चों से कहानियों की किताब पढ़कर सुनाने के लिए कह सकती है। व्हाट्सअप संदेश पढ़ कर सुनाने के लिये कह सकती है। बच्चों की वाचन क्षमता बढ़ेगी।

खाली समय में सब लोग बैठकर ताली बजाते हुए भजन गा सकते हैं। गाना गा सकते हैं। जप कर सकते हैं। ध्यान कर सकते हैं। ध्यान में भी यह प्रतियोगिता रखें कि देखते हैं कौन कितनी देर ध्यान लगा सकता है। आल्थी-पाल्थी लगाकर, सहज आसन में बैठकर, घुटनों पर दोनों हाथ रख कर 15 मिनट बैठें और मंत्र जाप करें। उस दौरान कितनी भी खुजली मचे, खुजलाने की कोशिश न करें। बिना हिले-डुले जाप करते रहें। यह अपने आपमें ध्यान है।

न जाने ऐसे कितने ही काम हैं, जिनको इन दिनों पूरा कर सकते हैं जो समय के अभाव में महीनों से क्या, सालों से लटक रहे हैं। ध्यान रहे कि इस दौरान न तो किसी के घर जाएँ और न ही अपने घर किसी को आमंत्रित करें।

ऋषि मुनियों के बारे में सोचें जो ऊँचे पहाड़ों पर एकांत में आश्रम बनाकर रहते थे और परीक्षण करते थे जिन्हें हम लोग यज्ञ करना कहते हैं। एकान्तवास में गुफाओं में रहकर लेखन कार्य करते थे। महाभारत जैसे महाग्रंथ को एकान्तवास में एक गुफा में रहकर ही लिखा गया था। वेद पुराणों को भी एकान्तवास में ही लिखा गया था। गोपीचंद्र, भरतरि हरि और मछिन्दर नाथ कितने वर्षों तक गुफा में रहे। हम तो किसी गुफा में नहीं रह रहे। हमारे पास मनोरंजन के लिये टी.वी है। टेप रिकॉर्डर व सीडी प्लेयर हैं। कंप्यूटर व मोबाइल भी हैं। मौका है कि अपने बच्चों से कंप्यूटर सीखें।

फिर देखें कि...

आपको इस एकांतवास में भी कितना मजा आएगा।

और महामारी पर..

बहुत जल्दी नियंत्रण पाया जाएगा।

तब आपको...

यह लॉकडाउन नहीं सताएगा

अतः आप सबसे निवेदन है कि इसमें सहयोग करें और अपने समय का सदुपयोग करें। धार्मिक ग्रंथों का नवरात्रों में पठन-पाठन करें। उसके बाद उपन्यास या पत्र पत्रिकाओं का अपनी रुचि के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं।

आपने कई दिन बेकार बिता दिये होंगे लेकिन अब इन दिनों का सदुपयोग करेंगे तो कई जीवन बचा सकेंगे और इस बीमारी को हरा सकेंगे। सोच को सकारात्मक रखें। सावधानी रखें। अफवाह ना फैलाएँ। अच्छी पुस्तकों का पठन-पाठन करें और बच्चों को संस्कारित करें।

राष्ट्रव्यापी पूर्ण बंद (लॉकडाउन) के दौरान समय का सदुपयोग (भाग-2)

विश्व भर में कोरोना वायरस का प्रकोप जारी है जिसकी वजह से कई देशों की सीमाएँ सील कर दी गई हैं। हमारे भारत देश में भी सभी राज्यों के सीमाएँ 21 दिन के लिये सील कर दी गई हैं।

सबको अपने घर में रहने के निर्देश दिए गए हैं। इस बात का सुकून है कि इससे महामारी के प्रकोप से बचने में मदद मिलेगी। रेस्टोरेंट बंद हैं तो बाहर जाकर अंट शंट खाना खाने के शौकीन वहाँ जा ही नहीं पायेंगे और थोड़ा स्वास्थ्य लाभ होगा। घर का बना हुआ पौष्टिक भोजन खायेंगे।

किसी ने पूछा कि- क्या आपको परिवार के साथ माहौल में कोई अंतर लग रहा है?

अरे भई! जब सभी घरों में हैं तो कुछ अंतर लगना लाजिमी है। पहले केवल छुट्टी वाले दिन रहते थे। तब भी कहीं न कहीं घूमने निकल जाते थे। अब तो मॉल, रेस्टोरेंट, मन्दिर तक बंद हैं तो कहाँ जायेंगे। इसके कारण महिलाओं के लिये तो इन दिनों कुछ ज्यादा ही... कुछ नहीं... बल्कि बहुत ज्यादा काम बढ़ गया है। पति व बच्चे घर में ही रहते हैं। खाली हैं तो सारा दिन भूख लगती रहती है या चाय की तलब लगी रहती है। पत्नी पूरा दिन रसोई में खटती है। एक पल भी आराम नहीं मिलता, क्योंकि परिवार के सदस्यों का उठने, नहाने खाने का कोई निश्चित समय नहीं है। पुरुष या तो कोई सहयोग करेंगे ही नहीं, यदि थोड़ा सा कर दें तो अहसान जताने से भी नहीं चूकते। खासकर वे जो अपने हाथ से एक ग्लास पानी लेकर भी नहीं पीते। नाम रखने के लिये हर समय तैयार रहते हैं। नई-नई डिश बनाने की फरमाईश होती है। एक अकेली औरत घर के काम करती है। आजकल मेड का आना भी वर्जित है। मौसम में बदलाव हो रहा है। सर्दी वाले कपड़े रखने होते हैं तो

गर्मियों वाले कपड़े निकालने होते हैं... जो अपने आपमें एक बहुत बड़ा काम है। घर में और भी अनेकों ऐसे काम हैं, जिन्हें करने के लिए समय चाहिए और किसी की मदद भी चाहिए। जैसे:- सर्दियों के बिस्तर रखना और गर्मियों के बिस्तर निकाल कर धूप में डालना। यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। मैं बच्चों से इस काम में सहायता लेती हूँ। बच्चों को कुछ सिखाती हूँ और बच्चों से कुछ सीखती हूँ।

आजकल सबको इकट्ठे बैठने का... परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिल रहा है। पहले तो आपा-धापी में समय ही नहीं मिल जाता था। मैं अपनी बात करूँ तो मेरे पोता-पोती भी स्कूल जाते समय नीचे केवल नमस्ते करने के लिए दो मिनट नजर आते थे। वापस आते थे तो बेहद थके हुए होते थे। तब केवल उनकी आवाज सुनाई देती थी। साथ बैठने का मौका केवल त्यौहार या किसी खास अपनों के आने पर ही होता था।

वैसे तो इन दिनों भी पोते-पोती की (दोनों की) वीडियो के माध्यम से क्लास होती है। खाली समय में कभी अपने दादा या कभी मेरे साथ बैठकर लूडो या साँप सीढ़ी खेल लेते हैं। मुझसे कहानियाँ सुन लेते हैं। अपने पापा के साथ ताश खेल लेते हैं।

मैंने इन दिनों उन्हें रामायण की कहानी सुनाई। रामायण निकाल कर रखी हुई थी। सबको कहा कि रोजाना सब 15-15 मिनट बारी-बारी इसे पढ़ेंगे। 5 मिनट महामृत्युंजय का जाप करेंगे। 5 मिनट पंचाक्षर जाप, 21 बार गायत्री मंत्र और 108 बार ओम का उच्चारण। बच्चे करते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है। घर के कामों में भी उनकी मदद लेती हूँ।

इन दिनों तो मैंने बहुत कुछ नया व सार्थक काम किया?

बच्चों से कुछ नया सीखा। कुछ अपने अनुभव उन्हें सुनाए। कंप्यूटर सीखने की कोशिश की। वह बात अलग है कि कम्प्यूटर पर निगाह गड़ाने से तबीयत खराब हो गई और सीख नहीं पाई लेकिन मोबाइल के कुछ फीचर जरूर सीखे। दो पुस्तकें प्रकाशित होने के लिए भेजी हुई थीं। 19 अप्रैल को

हमारे विवाह को 50 वर्ष पूरे हो जायेंगे, इसलिए स्वर्णिम वर्षगाँठ मनाने के बारे में सोच रहे थे। उस प्रकाशक को फोन किया था कि मैं अपनी पुस्तकों का विमोचन 19 अप्रैल को कराना चाहती हूँ ताकि यह मेरे लिए एक यादगार दिन बन जाए। उन्होंने अगले दिन ही पहला पीडीएफ बनाकर भेजा। मुझे संशोधन करने का समय मिल गया। उनसे समय तय किया। जहाँ-जहाँ, जिस-जिस पृष्ठ पर त्रुटियाँ थीं, उन्हें बताया। दूसरा पीडीएफ बनाकर भेजा गया। उसमें भी कुछ संशोधन कराए। यह काम लॉकडाउन के कारण ही संभव हो पाया।

एक व्हाट्सअप ग्रुप पर कुछ दिन पहले सूचना आई थी कि 96 पृष्ठ की पुस्तक 31 मार्च तक भेजनी है जिसका विमोचन 31 मई को होगा। इतनी जल्दी कैसे कर पाऊँगी... क्योंकि एक तो मेरे घर में लोगों का बहुत आना-जाना लगा रहता है, दूसरा आए दिन कभी किसी... तो कभी किसी बिमारी के लिये अलग-अलग अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ते हैं। 25 दिसम्बर से बायाँ कंधा व अँगूठा रैप्चर हो गया था, टिश्यू टूट गये थे। डॉ ने फिज़ियोथैरेपी कराने के लिये कहा था। यह भी कहा था कि इसे ठीक होने में कम से कम एक वर्ष लगेगा। फिर भी ठीक नहीं हुआ तो ऑपरेशन करना पड़ेगा। रोज फिज़ियो कराने जाती थी। तीन घण्टे लग जाते थे। फिर जो मशीन से नहीं अपितु बिना किसी उपकरण के करनी होती थीं, उन्हें घर में करती थी। उसमें काफी समय बीत जाता था। अतः चाहकर भी मन मसोसकर रह गई थी। उस बारे में विचार करना ही छोड़ दिया था। अब तो डिस्पेंसरी भी बंद है और लॉकडाउन की अवधि भी बढ़ा दी गई है...किसी के यहाँ जाना और किसी का आना वर्जित है, इसलिए समय ही समय था।

उस पुस्तक को प्रकाशित करवाने का विचार किया। रोजाना सबके उठने से पहले अपने लेखन में समय बिताया। फिर अपने पोते और नाती की मदद से उसका डॉक्यूमेंट बनवाया और भेज दिया।

लॉकडाउन के दौरान यह उपलब्धि क्या कम है?

कोरोना को हराना होगा

जिन्होंने महाभारत पढ़ी है उन्हें पता होगा। अपने पिता द्रोण के मारे जाने से अश्वत्थामा बहुत दुःखी था। दुर्योधन ने उससे नारायणास्त्र चलाने के लिये कहा। वह अस्त्र केवल अश्वत्थामा के पास था और उसका कोई तोड़ नहीं था। केवल एक उपाय था कि डटकर मुकाबला करने की बजाय शस्त्र त्याग दें। उसी पर आधारित है यह कविता,...!

अश्वथामा

अश्वत्थामा तुमको अपना नारायण अस्त्र चलाना होगा।

अपने शत्रु की सेना का, सर्वनाश करना ही होगा।

तेरे पितु को जिन लोगों ने मौत की नींद सुलाया है,
उनकी मौत का बदला लूँ, दिल में यह क्रोध समाया है।

नारायणास्त्र संधान किया पाण्डव सेना भयभीत हुई,
चकित रह गये श्रीकृष्ण, कोई राह न उनको सूझ रही।

त्राहि-त्राहि कर रहे सभी, ना करो... कोरोना चीख रहे।
आग लगी थी चहुँ ओर, भौंचक्के हो सब देख रहे।

तभी यकायक श्री कृष्ण ने अपने रथ को रोक दिया।
नारायणास्त्र का रुख करके धरती पर माथा टेक दिया।

करी घोषणा श्री कृष्ण ने, सभी शस्त्र का त्याग करो।

और भूमि पर नतमस्तक होकर के निश्चल बैठ रहो।

जैसा कहा गया था उसका पालन पूरा किया गया,
कोई विरोध न देख नारायण अस्त्र स्वयं ही शांत हुआ।

आज विश्व में वही युद्ध कोरोना बनकर घूम रहा।
कितने ही लोगों को इसने मौत की नींद में सुला दिया।

उच्च आत्म अनुशासन से ही इसे हरा सकते हो तुम।
क्वारन्टीन करो सब खुद को, तब ही बच सकते हो तुम।

इस लॉकडाऊन को सार्थक बनाने के लिये दिल में बहुत से विचार अंगड़ाइयाँ लेने लगे। अपने देश की अति पुरानी शल्य-चिकित्सा भी याद आई। शिव जी ने गणेश जी का शीश काट दिया था और पार्वती के पुत्र शोक को देखकर गणेश जी के सिर को हाथी के शीश से जोड़ दिया था। क्या चिकित्सा विज्ञान में आज भी ऐसा संभव है। आजकल के बच्चे अपनी उच्च संस्कृति व आविष्कारों से एकदम अंजान हैं। हमारे देश ने तो रामायण काल में ही कीर्तिमान रच डाले थे। जिसे आजकल दूरदर्शन कहते हैं, उसका आविष्कार महाभारत काल में हो चुका था। सभी जानते हैं कि संजय ने धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र युद्ध का आँखों देखा वर्णन किया था।

आकाश से आकाशवाणी हुई शब्द भी पुराने ग्रन्थों में पढ़ा होगा। आज कहते हैं, ये आकाशवाणी है। अब आप समाचार सुनिये। यानि रेडियो का आविष्कारक भी हमारा ही देश था। आजकल के बच्चों की अज्ञानता देखकर मन आहत होता है। यही सोच-सोचकर दिल में ऐसे भाव उमड़े जिन्हें कविता के माध्यम से प्रकट किया।

शंखनाद

आज भारतीय संस्कृति का शंखनाद है गूँज रहा।
पूरे विश्व ने आज भारतीय संस्कृति को सम्मान दिया।

कभी हमारी मान्यताओं की हँसी उड़ाया करते थे,
और हमारी श्रद्धा की खिल्लियाँ उड़ाया करते थे।

हाथ मिलाने की संस्कृति को आधुनिकता कहते थे।
हाय, हैलो कहने में खुद को गर्वित अनुभव करते थे।

कहर कोरोना का छाया तो हाय-हाय सब करते हैं।
हाथ मिलाते डर लगता, कर जोड़ नमस्ते करते हैं।

तिरस्कार करते थे जिसका उस संस्कृति को मान गये।
वैज्ञानिक संस्कृति हमारी, आज सभी पहचान गये।

बहुत तरक्की कर ली तुमने, कई देशों को जीत लिया।
औद्योगिक क्रांति के कारण जग ने बहुत विकास किया।

एक सूक्ष्म से परजीवी से सबका जीना हुआ मुहाल,
आज बैठ वो भी रोते हैं, जो थे पहले मालामाल।

सभी हेकड़ी धरी रह गई, विकसित खुद को कहते थे।
सूर्य अस्त होता न था जिनका, अहंकार में रहते थे।

आविष्कार किये जो हमने, सारे अपने नाम किये,
सबको निगलना चाहते थे, वो मुँह छिपाए घूम रहे।

इक छोटे से परजीवी से सब आतंकित दीख रहे
भारत देश की ओर सभी आशा की निगाह से देख रहे।

सदियों तक अपमान किया... रौंदते रहे... लूटते रहे।
खुद को सबसे श्रेष्ठ सिद्ध करने की जुगत में लगे रहे।

हमको तो कंगाल किया और अपनी तिजोरी भरते रहे,
ग्लोबल वार्मिंग करके खुद को बहुत आधुनिक समझ रहे।

एक सूक्ष्म से परजीवी ने सबको इतना डरा दिया।
धरा रह गया सब विकास, घुटनों तक लाकर खड़ा किया।

चूर हुआ वो घमण्ड जो कितने वर्षों में कमाया था।
इक छोटे से जीव ने सबको घर में कैद कराया था।

सबसे बड़ी शक्ति खुद को जो समझ-समझ इतराते थे।
जिनके इशारे पर दुनिया के नक्शे बदले जाते थे।

पूरी दुनिया का खुद को चौधरी समझते रहते थे।
अन्य देश पर हमला करने का मौका ढूँढते रहते थे।

आने वाले समय में जो सबको ही निगलना चाहते थे।
अपनी चौधराहट की सब पर धाक जमाना चाहते थे।

एक छोटे से परजीवी ने बतला दी उनकी औकात।
उनकी लालसाओं पर इसने किया भयंकर वज्राघात।

कोरोना का कहर हुआ, भारत से आशाएँ देख रहे।
आज सभी भारत की संस्कृति अपनाने को विवश हुए।

वेद ग्रन्थ सब नष्ट किये थे, नालन्दा को जला दिया था।
छह महीनों तक आग लगी, न जाने क्या कुछ नष्ट किया था।

जो मस्तक पर तिलक लगाते, उन्हें गँवार समझते हो।
उनसे ही क्यों आज कोरोना नाश का सूत्र पूछते हो?

पढ़ो दोबारा उन वेदों को, तुमने जिनको नष्ट किया।
माफी माँगो उन लोगों से, जिनका कभी उपहास किया।

उन्हीं मन्दिरों में जाकर अब शंखनाद करना होगा।
उन्हीं मन्दिरों में जाकर अब शीश झुकाना ही होगा।

देवी देवताओं का जो अपमान किया करते थे तुम।
और हमारी श्रद्धा का, भौंडा मजाक करते थे तुम।

यज्ञ-हवन करने वालों को, अनपढ़ समझा करते थे।
अपने अनुसंधानों पर, बेहद इतराते फिरते थे।

हमने तो रामायण काल में कीर्तिमान रच डाले थे।
बिना साधनों के समुद्र पर पुल निर्मित कर डाले थे।

ऐसे-ऐसे अस्त्र बनाये, जो तुम सोच नहीं सकते।
ऐसे-ऐसे शास्त्र रचे, कल्पना नहीं तुम कर सकते।

एक कमी थी हममें, जिसका तुमको बेहद लाभ मिला,
हम रहे अहिंसक सदा, उसी का तुमने फायदा उठा लिया।

बहुत कर चुके सर्वनाश अब अहंकार को छोड़ो भी,
गम्भीर समस्या के निदान हित, दिल को दिल से जोड़ो भी।

अब भी अगर नहीं चेते, तो सर्वनाश हो जाएगा।
भूमण्डल से प्राणी का अस्तित्व खत्म हो जाएगा।

चलो करें सब शंखनाद, हल करें समस्या का मिलकर।
सर्वे भवन्तु सुखिनः का, भाव जगाएँ मिल-जुलकर।

जब कोरोना लौटेगा

आधुनिक सुविधाओं ने जिंदगी आसान की है,
किन्तु हमारी परंपराओं से वंचित भी कर दिया हमें।

पाँच हजार वर्ष तक हमने जीवित रखी परम्परा अपनी,
आज हमारी संतानों ने उसको बिल्कुल भुला दिया।

हैचा, चेचक या हो तपेदिक, दूर मरीज को रखते थे।
क्वारन्टीन आजमाते थे, दूरी बना के रखते थे।

घर के लोग, कई बार स्नान, कपड़े कई बार बदलते थे।
रोजाना बिस्तर धोकर धूप में सुखाया करते थे।

घर में घुसने से पहले हाथ-पाँव, मुँह धोया करते थे।
बाहर की पहनी चप्पल को घर के बाहर रखते थे।

घर के जूते अलग थे जिनको घर में पहना करते थे,
घर में सब लकड़ी से बनी खड़ाऊँ ही पहना करते थे।

खाना खाने से पहले हाथों को मलकर धोते थे।
पानी जहाँ नहीं होता, वहाँ खेत की मिट्टी रखते थे।

भोजन से पहले मिट्टी से हाथ को माँजा करते थे।
जो मरीज होता था, उसको क्वारन्टीन में रखते थे।

भूल गये अपनी संस्कृति, पाश्चात्य रंग में रंगे सभी।
जो हमको गँवार कहते थे, सभ्य आज कह रहे सभी।

अब कोरोना आया है, वो सद्गुण फिर से लौटेंगे।
जन जागृति आएगी, सब इस महामारी से जीतेंगे।

जब कोरोना लौटेगा ये सद्गुण सिखा के लौटेगा।
भारत की संस्कृति का फिर से समय पुराना लौटेगा।

कितनी उच्च संस्कृति हमारी

आज मुसीबत आई विश्व पर कोरोना ने वार किया,
लोग घरों में बंद हो गये, जीवन भी दुश्वार हुआ।

किन्तु आज कोरोना ने संसार को यह भी सिखा दिया,
भारतीय संस्कृति ने विश्व में अपना सिक्का जमा दिया।

जो हमको जाहिल कहते थे, अंधभक्त भी कहते थे,
सदा हमारी भावनाओं को आहत करते रहते थे।

कितनी उच्च संस्कृति हमारी, आज समझ आया उनको।
योग, ध्यान और प्राणायाम का महत्व समझ आया उनको।

हैलो हाय जो कहते थे, जब हाय-हाय हो रही आज,
कर जोड़ नमस्ते करने का, राज समझ आया है आज।

क्यों शमशान से आने पर हम लोग नहाया करते थे,
दफन नहीं करते थे हम, मुर्दों को जलाया करते थे।

दफनाने की प्रथा जहाँ, वहाँ कब्रिस्तान पटे सारे।
कितने ही शव रखे हुए थे,जाने कहाँ रखे सारे?

धीरे-धीरे विश्व हमारे ये रिवाज भी मानेगा।
दफनाने की रस्म छोड़, दाह संस्कार को उत्तम मानेगा।

वो सुबह कभी तो आएगी

सिसक रही है धरती माँ, कोरोना का संकट छाया।
त्राहि-त्राहि कर उठा विश्व, सारा जग इससे थर्राया।

इसको काबू में करने के सबने कई उपाय किये।
जो संक्रमित पाए गये, आईसोलेशन में रखे गये।

हमने तो नवरात्रों तक में मन्दिर बंद कर दिये थे।
मन के मन्दिर में ही हमने अपने प्रभु के दरस कर लिये थे।

भीड़ न हो दर्शन करने वालों की, सब इसलिये किया।
स्थिति काबू में आ गई थी, कुछ लोगों ने उसे बिगाड़ दिया।

हो गये इकट्ठा मरकज में और कितनों को संक्रमित किया,
शैतानों की औलादों ने कितनों का जीवन छीन लिया।

वो यही सोचकर आए थे बर्बाद हमें कर डालेंगे,
हम तूफानों से लड़ते हैं, सिंहीं से खेलने वाले हैं।

इस बाधा को भी पार करेंगे, दुनिया को दिखला देंगे।
तबलीगी जमातियों को अब उनकी औकात बता देंगे।

ये कैसे धर्म प्रचारक हैं, क्या धर्म यही सिखलाता है?
संकटग्रस्त स्थिति में जिनको अपना स्वार्थ लुभाता है।

इन जमातियों से वो अच्छे, जिनको हम दानव कहते हैं।
धब्बा हैं धर्म के नाम पे ये, जो खुद को धार्मिक कहते हैं।

माना कि घड़ी मुश्किल की है, लेकिन यह बीत ही जाएगी।
जिस सुबह के सपने देखे थे, वो सुबह कभी तो आएगी।

क्या यही धर्म है?

लोग सुरक्षित रहें इसलिये मन्दिर तक भी बंद किये,
लोग इकट्ठा हो न पायें इसके सभी प्रबन्ध किये।

मन्दिर खुले रहेंगे तो सब दर्शन करने जायेंगे।
भीड़ भाड़ होगी तो विषाणु अपने पंख फैलायेंगे।

नवरात्रे होने पर भी हमने न, कोई विरोध किया,
कुछ अधर्मियों ने सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।

तबलीगी जमात का मरकज़ में मजहबी जलसा हुआ।
निजामुद्दीन में दो हजार लोगों ने मजमा लगा दिया।

तबलीगी जमात... जो खुद को धर्म प्रचारक कहते हैं,
इसे मानने वाले विश्व के कई देशों में फैले हैं।

खुद को धर्म प्रचारक कहने वालों को क्या पता नहीं?
भीड़ इकट्ठी नहीं करनी, क्या उनको इसका ज्ञान नहीं?

इतनी भीड़ ने जाने कितनों को संक्रमित किया होगा,
आगे भी कितने होंगे न जाने क्या भविष्य होगा?

यदि धर्म इसी को कहते हैं तो इससे बड़ा अधर्म नहीं।
थू है ऐसे प्रचारकों पर, जिनको बिल्कुल शर्म नहीं।

धर्म तो यह सिखलाता है कि मानवता हित काम करो
सब प्राणी सुख से जी पायें, ऐसे सभी उपाय करो।

पर यह कैसा धर्म है जो दुनिया में जहर फैलाता है।
सहयोग नहीं करता, उल्टा ज्यादा ही कहर बरपाता है।

हे भगवान! धरा पर तुमको अब फिर से आना होगा।
ऐसे अधर्मियों का तुमको सर्वनाश करना होगा।

कर जोड़ विनय करते हैं प्रभु आकर पृथ्वी का भार हरो।
सब प्राणी सुख से जी पाएँ, प्रभु इतना सा उपकार करो।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का



रचनाकार

राधा गौयल

विकासपुरी, नई-दिल्ली

Email- Radhagoyal222@gmail.com

Mobile - 9811599770

आपातकाल को सार्थक बनाने हेतु दिल में कुछ विचार आए, जिनको कविता या लेख के माध्यम से प्रकट किया। भारत की उच्च संस्कृति के बारे में लिखा। हमारे देश की संस्कृति तो बहुत पहले से उन्नत रही है। बच्चे के पैदा होने पर हमारे यहाँ सूतक लगता था। ग्रहण लगने पर खाना न तो पकाते थे और न ही खाते थे। पानी में तुलसी जी के पत्ते डालकर रखते थे। शमशान से आने पर हम लोग आते ही नहाते थे और पहने हुए सारे वस्त्र धोते थे। यहाँ तक कि जिस दिन किसी की मौत होती थी, वहाँ से आते ही पहले स्नान करते थे। जूते चप्पल रसोई में कभी नहीं लाते थे। खाना खाने से पहले हाथ, पाँव, मुँह धोते थे। आजकल के बच्चे इन सब बातों को नहीं मानते। उन्हें हमारी सभ्यता व संस्कृति से कोई लगाव नहीं है। कभी कभी तो इसी बात पर इतने तर्क-वितर्क हो जाते हैं कि क्या बताऊँ। जब बात कुतर्क तक पहुँच जाती है तो व्यर्थ बहस में न उलझकर चुप लगाना पड़ता है।

आज कोरोना महामारी बनकर आया है। सबसे पहले यह वहाँ फैला, जहाँ खान-पान की शुद्धता पर ध्यान नहीं दिया जाता। धीरे-धीरे लगभग पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। अन्य कई देशों के साथ-साथ हमारे देश में भी लॉकडाऊन घोषित कर दिया गया। सोचा कि इस आपातकाल में इसी विषय पर कविताओं व लेख के माध्यम से कुछ लिखा जाए। इसी बहाने आजकल की आधुनिक संतानों को अपनी उच्च संस्कृति का ज्ञान भी मिलेगा।



पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

**अन्तरा
शब्दशक्ति**

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क - 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com



978-93-5372-150-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- <https://www.facebook.com/antrashabdshakti/>

Fecbook group:- <https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/>